तात्पर्य

ज्ञान का तात्पर्य पारमार्थिक बोध से है। वास्तव में ज्ञान के समान दिव्य एवं पावन कुछ भी नहीं है। हमारे भवबन्धन का कारण अज्ञान है, जबकि ज्ञान मोक्ष का हेतु है। यह ज्ञान भक्तियोग का परिपक्व फल है। अतएव ज्ञानवान् को शान्ति अन्यत्र नहीं खोजनी पड़ती; उसे अपने में ही शान्ति का आस्वादन सुलभ हो जाता है। अभिप्राय यह है कि इस ज्ञान एवं शान्ति का पर्यवसान कृष्णभावना ही है। यही भगवद्गीता के दर्शन की अवधि है।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।३९।।

श्रद्धावान्=श्रद्धालु; **लभते**=प्राप्त करता है; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **तत्परः**=उसमें अतिशय अनुरक्त; **संयतेन्द्रियः**=संयमित इन्द्रियों वाला; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **लब्ध्वा**=लाभ कर; **पराम्**=दिव्य; **शान्तिम्**=शान्ति को; **अचिरेण**=अतिशीघ्र; **अधिगच्छति**=प्राप्त हो जाता है।

अनुवाद

जो पुरुष श्रद्धावान् है, जितेन्द्रिय है और ज्ञान में लीन है, वह तत्काल परम शान्ति को प्राप्त हो जाता है।।३९।।

तात्पर्य

कृष्णभावना का ज्ञान श्रीकृष्ण में दृढ़ श्रद्धावान् को ही प्राप्त हो सकता है। श्रद्धावान् वही है जिसे यह विश्वास हो कि केवल कृष्णभावनाभावित कर्म करने से वह परम सिद्धि को प्राप्त हो जायगा। श्रद्धा की उद्भावना भक्तियोग एवं **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** —इस महामन्त्र के कीर्तन से होती है जो सम्पूर्ण विषयवासना से चित्त का परिमार्जन कर देता है। इसके साथ, इन्द्रियसंयम भी अनिवार्य है। श्रीकृष्ण में श्रद्धावान् जितेन्द्रिय पुरुष अविलम्ब कृष्णभावनारूप ज्ञान की कृतार्थता को सुगमता से प्राप्त हो जाता है।

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।।४०।।

अज्ञः=शास्त्रों के ज्ञान से शून्य मूर्ख; **च**=तथा; **अश्रद्दधानः**=शास्त्र में श्रद्धाशून्य; **च**=भी; **संशयात्मा**=शंकाग्रस्त मनुष्य; **विनश्यति**=फिर गिर जाता है; **न**=न; **अयम्**=यह; **लोकः**=संसार; **अस्ति**=है; **न**=न; **परः**=भावी जीवन; **न**=न; **सुखम्**=सुख; **संशय आत्मनः**=संशयी मनुष्य के लिए।

अनुवाद

परन्तु सद्शास्त्रों में संशययुक्त, अज्ञानी और अश्रद्धालु मनुष्यों को भगवद्भाव की प्राप्ति नहीं होती। संशयात्मा के लिए तो इस लोक में अथवा परलोक में भी कोई सुख नहीं है।।४०।।